

## पद १४४

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

मुगुटपर वारूं कोटि शशी । दशरथ राजा रामचंद्र पर वारूं ॥ध्रु॥  
राजा दशरथके चार दुलहरवा । तामे राम अति प्यारो ॥१॥ कुंडल  
की छब बरन न आवे । धनुख हात बीच धारो ॥२॥ सीता राम  
लछमन भरत शत्रुघन । सन्मुख हनुमन्त ठारो ॥३॥ मानिक के  
प्रभु अयोध्यावासी । ताके चरन बलहारी ॥४॥